संस्थापित १८६७ ई०

ओ३म्

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

एक प्रति ₹ २.००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) आजीवन शुल्क ₹ १०००

● वर्ष : १२३ ● अंक १५ ● १० अप्रैल २०१८ बैसाख कृष्ण पक्ष दशमी संवत् २०७५ ● दयानन्दाब्द १६४ वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १६६०८५३११६

दयानन्द के वीरों में यह शिथिलता क्यों ?

–डॉ० धीरज सिंह आर्य, सभा प्रधान

भारत की जनगणना के आकड़ों पर विचार करने से पता चलता है कि सन् १६३१ में भारत में आर्यों की जन संख्या ६६०२३३ थी और १६४१ ई० में गणना लगभग ४० लाख है। यह तो मैंने आर्य समाज के विस्तार की बात लिखी परन्तु आप इतनी भारी आर्यों की संख्या भारत के नरनारियों में इतनी लोकप्रिय नहीं कितनी कि सन् १६०१ में थी। जन की संख्या केवल ६२४०१६ थी या १६११ में २४३४४५ थी। इसका कारण क्या है आर्य समाज के इतने लम्बे चौड़े विस्तार, के होते हुए भी आज आर्यसमाज के भीतर यह शिथिलता क्यों पाई जाती है? कारण बिलकुल स्पष्ट है, सन् १६०१ में जो आर्य थे वे तपेतपाये, परखे परखाये, शुद्धि और ऊँचे आचरण वाले थे उनकी आँखों के सामने ऋषि दयानन्द का तप त्याग और ब्रह्मचर्य दिखाई देता था, उनके हृदयों में वेद भगवान के लिए अटूट प्रेम भरा था, वे अपने तप लगन और साधन द्वारा जीवन की उन्नति में मगन थे घर में, दुकान पर और दफ्तर में उनके आर्य होने पर जो कष्ट और आपत्तियाँ आती थी उन को सहर्ष सहन करते थे परन्तु प्रचार कार्य में मस्त रहते थे। उनका उपदेश जनता के हृदय पटल पर जम जाता था। वे पारस के समान ये जिनके सत्संग से लोहा भी सोना हो जाता था उन आर्य वीरों का ऊँचा चरित्र देखकर निधर्मी भी समझते थे कि आर्यसमाजी होकर कोई झूठ नहीं बोलता आदलतों में यदि कोई आर्य भूलाभटका गवाही देने पहुँचता था तो अदालत उन पर पूर्ण विश्वास करती थी चाहे उन अदालतो में मुसलमान न्यायाधी हो या ईसाई परन्तु आज के आर्यो में जोश नहीं वह श्रद्धा, नहीं प्रेम, नहीं उत्साह। युवक आर्यसमाज में नहीं आते वृद्ध में नहीं आते वृद्ध अपनी गद्दी नहीं छोड़ते आर्यसमाजियों की स्त्रियां मंदिरों मस्जिदों और कबरों पर जाते देखा गया है। मृतक श्राद्ध करती है, मूर्ति पूजा करती है।

बड़े–बड़े आर्य समाजियों के बच्चे आर्य सामज से दूर का भी वास्ता नहीं रखते हैं। वे व्यक्ति अपने बच्चों पर अपने आर्यत्व की छाप नहीं लगा सकता वह दूसरों का क्या उद्धार कर सकता है। आर्य सामज मन्दिरों की यह अवस्था है कि कई मन्दिरों में साप्ताहिक सत्संग तक नहीं लगता और सेवा कार्यों का तो क्या कहना। जिन मन्दिरों में सतसंग लगता है तो हाजिरी बिल्कुल सन्तोषक जनक नहीं होती है। इसका कारण यह है कि युवक स्त्रियां और बच्चे समाज में नहीं आते। युवकों का मन संध्या और हवन में नहीं लगता।

आर्यसमाज के नेताओं से सविनय प्रार्थना है कि उपर्युक्त शिथिलता को दूर करने के लिए कुछ सोचें और विचारें ऐसे साधन निकलें जिससे यह शिथिलता दूर हो जावे।

कुछ साधन मैं सेवा में उपस्थित करता हूँ कृपा करके उन पर ध्यान दें।

१. आर्यसामज के लिए आर्यवीर दल को बलशाली बनाया जावे। आर्य वीरदल ही समाज के लिए

शेष पृष्ठ ७ पर

अन्तरंग अधिवेशन सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०, लखनऊ के सभी पदाधिकारियों, प्रतिष्ठित, सहायुक्त एवं अन्तरंग सदस्यों को सूचित किया जाता है कि आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०, लखनऊ की अन्तरंग सभा का साधारण अधिवेशन दिनांक–२२ अप्रैल, २०१८ दिन–रविवार (बैसाख शुक्ल सप्तमी) को प्रातः ११.०० बजे से आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०, नारायण स्वामी भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ में संस्था के प्रधान/का०प्रधान– डॉ० धीरज सिंह की अध्यक्षता में सम्पन्न होगी, जिसमें आपकी उपस्थिति प्रार्थनीय है।

एजेण्डा एवं विस्तृत विषयों की रूप–रेखा सभी को डाक द्वारा भेज दी गई है। कृपया समय से उपस्थित होकर अधिवेशन को सफल बनाये।

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
सभा मन्त्री

वैदिक उपदेश

परोपेहि मनस्पाप किमशस्तानि शंससि।
परेहि न त्वा कामये वृक्षाः वनानि संचर गृहेषु गोषु में मनः।।

अर्थात्– ऐ मेरे मन के पाप तू दूर हट जा, तू मुझे क्यों बुरे विचार देता और बुराइयों की ओर ले जा रहा है। चल दूर हो, कहीं वृक्षों और वनों में जाकर वास कर, मैं तुझे सर्वथा नहीं चाहता क्योंकि मेरा मन घर के कार्यों में और गौओं की सेवा में लगा हुआ है।

इस मन्त्र द्वारा वेद ये संकेत देता है जो सर्वदा कार्यों में लगे रहते हैं, वह पापों से बच जाते हैं। किन्तु "खाली दिमाग शैतान का घर" कहावत के अनुसार व्यक्ति कुविचारी हो जाता है।

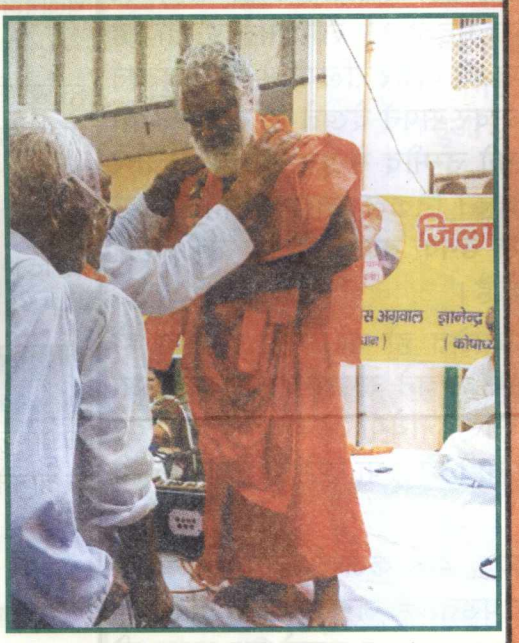

(६) छठा है ईर्ष्या कालुष्य–दूसरों के धन, भवन, पद एवं गुणों को देखकर जलते रहना इसे ईर्ष्या कालुष्य कहते हैं, आज इसी जलन के कारण विश्व दुःख समुद्र में डूब रहा है।

(७) सातवां है असूया कालुष्य–दूसरों के गुणों को अवगुण रूप में देखना अथवा भलाई को भी बुराई के रूप में कहते फिरना, यथा किसी धर्मात्मा को पाखण्डी और व्रती को दम्भी कहना या सदाचारी पर भी झूठे कलंक लगाना।

(८) आठवां है अमर्ष कालुष्य–इसका तात्पर्य है किसी से अपमानित होकर या कठोर वचन सुनकर उसे सहन न करना और बदला लेने के लिए कटिबद्ध हो जाना।

उपरोक्त आठ मन के दोष वा पाप हैं जिनके द्वारा कोई भी व्यक्ति पाप में प्रवृत्त होता है, अतः मन के इन दुर्गुणों वा पापों से अपने आपको बचाना परम श्रेयस्कर है।

इसलिए वेद उपदेश देता है कि "मानव दृढ़ता के साथ मन के पापों का निवारण करें।"

सम्पादकीय.....

समाज को जागरूक होना पड़ेगा

जो जितनी भीड़ इकट्ठा कर सकेगा जीत उसकी कानून, न्याय, सत्ता उसकी जेब में है।

अगर पेट में रोटी होगी, तन पर कपड़ा होगा व रहने का मकान होगा, तो वे भारतीय लोग भीड़ में जाना कम कर देते हैं, व वोट डालने से भी कतराते हैं।

पेट में भूख होगी, बदन आधा नंगा होगा, रहने मकान के लिए जद्दोहद होगी तो १००/५० रू देकर रैली, तोड़ फोड़, वोट आदि के लिए लोग खरीदे जा सकते हैं। यही है भारत में असली भीड़तंत्र जिसे लोगो को धोखा देने के लिए लोकतंत्र का नाम दिया गया है।

और राजनीति दलों को सरकार बनाने के लिए वोट चाहिए। भरपेट खाना खाने वाला, पढ़ा लिखा व रोजगार वाला भारतीय वोटर वोट देने के लिए लाईन में लगना अपनी बेइज्जती समझता है, तब वोट कौन अधिक देता है, कम पढ़े या अनप्ढ़, गरीब, जो किसी ना किसी लालच, पैसा, शराब आदि के कारण वोट डालने जाते हैं।

तब सरकारें जन कल्याण की बजाय, नागरिकों को सशक्त बनाने की बजाय ऐसी नीतियां बनाती है ताकि वोटरों की संख्या बढ़े, वा वो जिंदा रहे, ताकि वोट के समय उनको खरीदा जा सके।

इसलिए आज तक इन वोटरों की नब्ज को पहचानते हुए भारत में सरकारों ने ऐसी ही नीतियां बनाई। जिसके लिए राजनीतिज्ञों के साथ जनता भी जिम्मेदार है! क्योंकि अधिकतर वोटर अपनी बुद्धि का सदुपयोग करके वोट नहीं देता, वो वैसे तो बहुत अच्छी बातें करेगा पर वोट देते समय सबसे पहले जाति की ओर भागता है, एक वर्ग केवल अपने मजहब तक सीमित रहता है। उकसे बाद वो कहीं न कहीं लालच में आता है, व कुछ क्षेत्रों में तो बहुत से ऐसे लोग होते है, उनका सौदा कोई और पहले ही कर चुका होता है, उनका सौदा कोई और पहले ही कर चुका होता है, उनको बेच दिया जाता है व वोटर को पता भी नहीं होता कि उनको पहले ही लाखों में बेचं दिया होता है व फिर उनका सौदा करने वाला उनको कुछ शराब, कोल्ड ड्रिंक, या कुछ नकदी दे कर किसी खास को वोट देने के लिए मतदान केन्द्र तक ले जाता है।

यह भारतीय भीड़तंत्र की अधिकतर कहानी है। जब जनता के सशक्तिकरण का सपना केवल भाषणों तक ही रह जाता है या शक्तिकरण करने वाले को पीछे ढकेल दिया जाता है।

ए०सी०/एस०टी० एक्ट में हुए न्यायोचित संसोधन को राजनैतिक मुद्दा बना वोटों की राजनीति करने वाले राजनैतिक घराने दलितों के नाम पे अरबो की संपत्ति बना गये, कई बार सत्ता में आये पर आज तक वोटर तो बेचारे दलित के दलित ही रहे, पर उनको अपने राजनीतिक व्यापार का कच्चा माल समझने वाले स्वर्ग से भी बेहतर जिंदगी जी रहे हैं। आज भी उनको सही शिक्षा, सही जीवन स्तर नहीं मिल सका, इन्हें आज भी निम्न स्तर की जिंदगी से नहीं उभारा। उनके नाम पर उनके बीच के सम्पन्न व राजनीतिक पहुंच वाले कुछ मुट्ठी भर लोग मलाई खा रहे हैं, आज भी केवल वोटर रूपी कच्चा माल है, वो आज भी वोटर रैलियों में भीड़ जुटाने का कच्चा माल है, वे आज भी समाजवाद आने के सुंदर सपने देखते है, वो आज भी अपनी पुरानी पीढ़ियों की तरह सुखी जीवन जीने की उम्मीद में इन झूठे व मक्कार राजनीतिक लोगों के बहकावे में आकर तोड़फोड़ करने निकल जाते है, गोलियों से मारे जाते हैं, और उनको कीड़े मकोड़े समझने वाले उनके बल पर खुद बड़ी–बड़ी कम्पिनियों व व्यापारिक साम्राजों के मालिक बन चुके है।

ये पार्टियां कभी नहीं चाहती की दलित शिक्षित हो या गरीब शिक्षित हों क्योंकि यदि दलित गरीब शिक्षित हो गया तो उसमें सोचने समझने की क्षमता आ जायेगी और वह अपने मतदान सही उपयोग करना सीख जायेगा आज गरीब का स्तर नीचे गिरता जा रहा है क्योंकि उसे समान शिक्षा का नहीं मिल पा रही है, शिक्षा इतनी महंगी है कि वह अपने बच्चों को पढ़ा नहीं सकता।

सरकारी स्कूलों की दशा यह है कि अध्यापक कम कलर्क ज्यादा लगते है क्योंकि हर बालक का भोजन का हिसाब लिखना पड़ता है जनगणना में घर–घर जाकर सम्पर्क करना पड़ता है दिन भर रजिस्टर भरने के बाद पढ़ाने का समय ही नहीं बचता सरकारों ने अध्यापकों को उलझा रखा है जिसका परिणाम विद्यार्थी भुगत रहे हैं।

दूसरा वर्ग वह है जो अपने आपको दलित कहकर आरक्षण की मांग करता है समझ में एक बात नहीं आती लोग उन्नति की ओर जाते लेकिन यह वही पर खड़े नजर आते हैं। नेताओं को राजनीति करनी है अपने वोट बैंक को सुरक्षित रखना है। यह उनका अधिकार समझते है। आज पुनः समाज सभी वर्गों एक ओर लड़ाई लड़नी होगी वह है अपने आपको जागरूक करना और समाज में जागरूकता लाना यह कदम उठाना अति आवश्यक है नहीं तो इन बातों को लेकर बिना कारण हम इन राजनैतिक पर्टियों के बहकावे में देश का समाज का अपने लोगों का अहित करते रहेंगे। – सम्पादक

गतांक से आगे ..... **सत्यार्थ प्रकाश**

अथ षष्ठ समुल्लासारम्भः

अथ राजधर्मान् वक्ष्यामः

सच्चा राजा कौन है–

स राजा पुरूषो दण्डः स नेता शासिता सः। चतुर्णामाश्रमाणां च धर्मस्य प्रतिभूः स्मृतः।।१।।

दण्डः शास्ति प्रजाः सर्वा दण्ड एवाभिरक्षति। दण्डः सुप्तेषु जागर्ति दण्डं धर्मं विदुर्बुधाः।।२।।

समीक्ष्य स धृतः सम्यक् सर्वा रञ्जयति प्रजाः। असमीक्ष्य प्रणीतस्तु विनाशयति सर्वतः।।३।।

दुष्येयुः सर्ववर्णाश्च भिद्येरन्सर्वतेतवः। सर्वलोप्रकोपश्च भवेद्दण्डस्य विभ्रमात्।।४।।

यत्र श्यामो लोहिताक्षो दण्डश्चरित पापहा। प्रजास्तत्र न मुह्यन्ति नेता चेत्साधु पश्यति।।५।।

तस्याहुः सम्प्रणेतारं राजानं सत्यविादिनम्। समीक्ष्यकारिणं प्राज्ञं धर्मकामार्थकोविदम्।।६।।

तं राजा प्रणयन्सम्यक् त्रिवर्गेणाभिवर्द्धते। कामात्मा विषमः क्षुद्रो दण्डैनैव निहन्तये।।७।।

दण्डो हि समुहत्तेजो दुर्धरश्चाकृतात्मभिः। धर्माद्विचलितं हन्ति नृपमेव सबान्धवम्।।८।।

सोऽसहायेन मूढ़ेन लुब्धेनाकृतबुद्धिना। न शक्यों न्यायतो नेतुं सक्तेन विषयेषु च।।९।।

शुचिना सत्यसन्धेन यथाशास्त्रानुसारिणा। प्रणेतुं शक्यते दण्डः सुसहायेन धीमता।। १०।। मनु०।।

जो दण्ड है वही पुरूष राजा, वही न्याय का प्रचारकर्त्ता और सब का शासनकर्त्ता, वही चार वर्ण और आश्रमों के धर्म का प्रतिभू अर्थात् जामिन है।।१।।

वही प्रजा का शासनकर्त्ता सब प्रज का रक्षक, सोते हुए प्रजास्थ मनुष्यों में जागता है इसीलिए बुद्धिमान् लोग दण्ड ही को धर्म कहते हैं।।२।।

जो दण्ड के अच्छे प्रकार विचार से धारण किया जाय तो वह सब प्रजा को आनन्दित कर देता है और जो बिना विचारे चलाया जाय तो सब ओर से राजा का विनाश कर देता है।।३।।

बिना दण्ड के सब वर्ण दूषित और सब मर्यादा छिन्न-भिन्न हो जायें। दण्ड के यथावत् न होने से सब लोगों का प्रकोप हो जावे।।४।।

जहां कृष्णवर्ण रक्तनेत्र भयंकर पुरूष के समान पापों का नाश करने हारा दण्ड विचरता है वहां प्रजा मोह को प्राप्त न होके आनन्दित होती है परन्तु जो दण्ड का चलाने वाला पक्षपातरहित विद्वान् हो तो।।५।।

जो उस दण्ड का चलाने वाला सत्यवादी, विचार के करनेहारा, बुद्धिमान, धर्म, अर्थ और काम की सिद्धि करने में पण्डित राजा है उसी को उस दण्ड का चलानेहारा विद्वान् लोग कहते हैं।।६।।

जो दण्ड को अच्छे प्रकार राजा चलाता है वह धर्म, अर्थ और काम की सिद्धि को बढ़ाता है और जो विषय विषय में लम्पट, टेढ़ा, ईर्ष्या करनेहारा, क्षुद्र नीचबुद्धि न्यायाधीश राजा होता है, वह दण्ड से ही मारा जाता है।।७।।

जब दण्ड बड़ा तेजोमय है उस को अविद्वान्, अधर्मात्मा धारण नहीं कर सकता। तब वह दण्ड धर्म से रहति कुटुम्बसहित रजाा ही का नाश्या कर देता है।।८।।

क्योंकि जो आप्त पुरूषों के सहाय, विद्या, सुशिक्षा से रहित, विषयों में आसक्त मूढ़ है वह न्याय से दण्ड को चलाने में समर्थ कहीं नहीं हो सकता।।९।।

और जो पवित्र आत्मा सत्याचार और सत्पुरूषों का संगी यथावत् नीतिशास्त्र के अनुकूल चलनेहारा श्रेष्ठ पुरूषों के सहाय से युक्त बुद्धिमान् है वही न्यायरूपी दण्ड के चालने में समर्थ होता है।।१०।। इसलिए–

सैनापत्यं च राज्यं च दण्डनेतृत्वमेव च। सर्वलोकाधिपत्यं च वेदशास्त्रविदर्हति।।१।।

दशावरा वा परिषद्यं धर्मं परिकल्पयेत्। त्र्यवरा वापि वृत्तस्था तं धर्मं न विचालयेत्।।२।।

त्रैविद्यो हैतुकस्तर्की नैरूक्तो धर्मपाठकः। त्रयश्चाश्रमिणः पूर्वे परिषत्स्याद्दशवरा।।३।।

ऋग्वेदविद्यजुर्विच्च सामवेदविदेव च। त्र्यवरा परिषज्ज्ञेया धर्मसंशयनिर्णये।।४।।

एकोऽपि वेदविद्धर्मं यं व्यवस्येद् द्विजोत्तमः। स विज्ञेयः परो धर्मो नाज्ञानामुदितोऽयुतैः।।५।।

अव्रतानाममन्त्राणां जातिमात्रोपजीविनाम्। सहस्त्रशः समेतानां परिषत्त्वं न विद्यते।।६।।

यं वदन्ति तमोभूता मूर्खा धर्ममतद्विदः। तत्पापं शतधा भूत्वा तद्वक्तृननुगच्छति।।७।। मनु०।।

क्रमशः

युवा शक्ति एवं भक्ति का समन्वयक.....
ब्र0 राज सिंह आर्य

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा
उ०प्र०, लखनऊ
संचालक–गुरूकुल पूठ, हापुड़
मो० ६८३७४०२१६२

प्रातः कालीन में ईश्वर प्राणिधान द्वारा साधना के पथ का पथिक, यज्ञ एवं होम का आधार बनाकर जीवन के संतुलन को समाज के लिए अहर्निश सुदृढ़ करने का स्वप्न साकार करने के लिए प्रयत्नशील व्यक्तित्व, कुर्ता एवं धोती धारण कर गौरिक उत्तरीय वस्त्र से सुशोभित होकर प्रसनवदन सदैव अभ्यामत से मिलकर अपनी प्रसन्नता की अभिव्यक्ति से शोभायमान रूप को देखते ही ब्र० राज सिंह आर्य की प्रतिमूर्ति दृष्टिगोचर होने लगती है। वे स्वयं निर्मित होकर समाज के निर्माण में विश्वास रखते थे उसी के लिए उनका चिन्तन था उसी के लिए उनकी दनिचर्या को सार्थकता में परिवर्तित करता था। वे बाकी के कलाकार थे वे ह्रदय से संपृक्त होकर अपनी भावनायें प्रकट करते हुए जब प्रवचन करते थे वो स्वयं भी रोकर श्रोताओं को भी रूलाने का सामर्थ्य रखते थे। समाज निर्माण का स्वप्न साकार करने के लिए जब अपनी योजनायें प्रारम्भ करते थे तो श्रेष्ठ लोग अपनी उदारता से उनके सहयोगी बनने के लिए आतुर हो उठते थे और उनकी इच्छानुसार उन्हें महाराणा प्रताप समझकर स्चयं भामशाह बनने का सौभाग्य अनुभव करते थे यह उनके शब्दों के संयोजन का चमत्कार जब ह्रदय से मिलकर आत्मीय रूप में प्रकट होता था तो आबाल वृद्ध

प्रभावित होकर उनके गुणगान के लिए बाध्य हो उठता था। सार्वदेशिक आर्यवीर दल में लम्बे समय तक उनके साथ रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। वे महामंत्री पद पर रहकर उसका संवर्द्धन करते रहें और दिल्ली में एक सममेलन करके आर्यजगत में नीवनता का संचार किया। प्रभु की परीक्षा में भी उत्तीर्ण होकर दिखाया स्वामी देवव्रत जी प्रधान संचालक जी की अध्यक्षता में अभूतपूर्व दृश्यों का वातावरण सदैव अवस्मिरणीय रहेगा उसी से उन्हें आर्यजगत में विशेष सम्मान भी प्राप्त हुआ। राजनेताओं का भी सहयोग प्राप्त किया और अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन करने का स्वप्न भी साकार करने का सौभाग्य प्राप्त कर लिया। जो दिल्ली रोहिणी में एक उदाहरण बनकर अपने नाम को सार्थक करने में सफल हुए उनका व्यक्तित्व प्रभावशाली था वे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष पद पर सुशोभित रहे लेकिन देश विदेश में वेद प्रचार के कार्य में भी सदैव प्रयास करते रहे। आपकी योजनाओं में सहयोगी महानुभावों की सूची बहुत लम्बी है लेकिन विनय आर्य मंत्री , धर्मपाल आर्य जैसों का सहयोग न मिलता तो सम्भवतः इतना बड़ा कार्य सम्भव नहीं था। अतः आप को सर्वातमना सहयोगी मिले यह भी आप का सौभाग्य ही कहा जायेगा। आप इतने व्यस्त एवं उच्च स्तरीय नेता बनने के बादी भी सामान्य ग्रामीण आर्य सामजों के सम्मेलनों में भी जने में उत्साह पूर्वक प्रसन्नता से स्वीकृति प्रदान करके आर्यों को उत्साहित करते थे। एक दिन चर्चा करते हुए अचानक बोले कि आपने अपना गुरूकुल पूठ की नही दिखाया। मैंने कहा कि गरीबों के यहां कौन जाता है। आप तो बड़े–बड़े शहरों व नगरों तथा विदशों में ही अधिक व्यस्त रहते है। तो बोले एक बार बुलाकर तो देखों जरूर आउंगा। मैंने मार्च की तिथियां लिखवाद दी, न विज्ञापनों में नाम छपवाया और न ही निमन्त्रण पत्र ही भिजवाया यही मान कर की लोग मिल जाते है कि आप औपचारिकता वश कह ही देते है। लेकिन सम्मेलन के पूर्व ही सायं काल एक सज्जन के साथ गुरूकुल के मुख्य द्वार पर मैंने ब्र० राज सिंह आर्य जी को देखा तो महद् आश्चर्य युक्त प्रसन्नता को मैं छिपा नही सका और पूरे तीन दिन तक वे गुरूकुल में रहे। सामान्य रूप से रहते हुए अनुभव नहीं होने दिया कि मैं कोई विशेष सुविधाओं की अपेक्षा नहीं रखता हूं। तीनों दिन आपके विचारों से आर्य जनता लाभान्वित हुई और उनके प्रवचनों को आज भी लोग याद करते हैं। आप की उदारता और महानता के लिए आज भी मेरे ह्रदय में उनके लिए जो सम्मान है उसे मैं कभी भूल नहीं सकूंगा। चलते समय जब दक्षिणा देने का प्रयास किया तो बोलें कि गुरूकुल महर्षि दयानन्द सरस्वती के विचारों को फैलाने की फैक्ट्री है। इन्हें सहयोग देने की बात होनी चाहिए। लेने को तो बहुत बड़ी दुनयिा पड़ी है। यहां तो देने की बात होनी चाहिए आप ने तो किराया लेना भी स्वीकार नहीं किया। तब से मुझे लगा कि वास्तव में यह मिशनरी भावना से कार्य करने में इसीलिए सफल हैं कि यथा योग्य संस्थओं को प्रोत्साहन प्रदान करके उनका मनोबल भी बड़ाते है कोई कितना भी बड़ा महान वैसे ही हवा में नहीं बन जाता है। आपकी दिनचार्या, आपका जीवन आर्य समाज एवं आर्यवीर दल के लिए ही समर्पित रही। बैठक में आपकी योजनाओं को सुनने में भी अच्छा लगता था और अपकी ही इच्छा के प्रति सभी अधिकारी प्रभावित होते थे। दिल्ली में गुरूकुल गौतमनगर अथवा किसी आर्य समाज के कार्यक्रम में, बैठक मे जहां भी मिले सदैव आग्र समाज के कार्य को आगे बढ़ाने की योजनाओं की तैयारी करते रहें और उसी के लिए आपका जीवन समर्पित रहा। अभी आर्य सन्देश में समाचार पढ़ा कि ब्र० राज सिंह ने धर्मपाल आर्य को दिल्ली सभा का प्रधान बनाने के लिए प्रस्ताव प्रस्तुत किया और सर्वसम्मति से निर्वाचन सम्पन्न हो गया और यह कहा कि यह परम्परा स्थापित होनी चाहिए पढ़कर प्रसन्नता हुई और विचार कर ही रहा थाि कि उन्हें फोन पर बधाई दूंगा। लेकिन किसकों पता थाि कि फोन पर जो सूचना आ रही है वो इतनी दुःखद है कि जिसे प्रत्येक आर्य सुनकर हतप्रभ रह जायेगा। मुझे भी ऐसी ही दुःखद अनुभूति हुई। पूरा गुरूकुल शोकमय हो गया और शान्ति यज्ञ तथा शोक सभा करके उनके प्रति मौन धारण किया आज कुछ उनकी पुरानी स्मृतियों में खो जाने पर जो भी विचार मन में आये उन्हें उनके प्रति स्मृति की धरोहर में सुरक्षित रखते हुए आर्यजनों तक निवेदन करना चाहता हूं कि आर्य समाज की प्रतिष्ठा आज आर्यों एवं समाजों के अधिकारियों के हाथों में सुरक्षित है। आर्य समाज के उपदेशक, विद्वान, सन्यासी, आपके माध्यम से ही इस दिशा में आपके प्रेरणा श्रोत बन सकते हैं। ब्र० राज सिंह समर्पित व्यक्तित्व के प्रति "आर्यमित्र परिवार, आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० एवं गुरूकुल पूठ तथा आर्यवीर दल उ०प्र० की ओर से उन्हें अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि प्रदान करता हुआ परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि प्रभु हम सभी आर्यों को भी इस प्राकर का उत्साह प्रदान करें।

कही न कही कोई त्याग, तप, बल, साधना, भक्ति की शक्ति, आत्मा की शक्ति ही तो समाजिक शक्ति को बढ़ाने में सहयोगी बनती है और उसके लिए उन्होंने अपने जीवन को तपाया था। अपनी साधना से आत्म बल को बढ़ाया भी तभी समाज सेवा का इतना बड़ा कार्य सम्भव कर सकें। आपका दिल्ली सकराकर के पूर्व मुख्यमंत्री साहिब सिंह वर्मा से अत्यन्त घनिष्ट सम्बन्ध था। दिल्ली के सम्मेलनों में साक्षात अनुभव किया है कि आप के फोन पर ही सहजभाव से पारिवारिक व्यक्ति की तहर वार्तालाप कर लेते थे और उसे साकार भी करते थे। जब आर्यवीर महासम्मेलन में तूफान से सारा कार्यक्रम स्थल क्षतिग्रस्त हो गया था तभी उन्होंने स्वयं आकर स्थल का निरीक्षण किया और सभी आर्य अतिथियों की आवास एवं भोजन की व्यवस्था की थी। बीच–बीच में फोन पर वार्ता होते हुए देखा भी कुशलता लेते रहे दिल्ली के आर्य महासम्मेलन में भी उनका पूरा सहयोग प्राप्त किया था यह सब चमत्कार देश विदेश में भी अनुभव किया जा सकता है। अतः उनका स्वध्याय, प्रवचन एवं व्यवहार यह सिद्ध करता है कि उन्होंने महर्षि पतंजलि के सूत्र को जीवन में साक्षात् किया कि चतुर्भि प्रकारै विद्या उपयुक्ता भवित –आगम कालेन स्वाध्याय कालेन प्रवचन कालेन व्यवहार कालेनेति...। आर्य वीर दल के प्रान्तीय सम्मेलनों में भी हरियाणा, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, अवश्य जाते थे। मेरठ के सम्मेलन में आप का स्वास्थ्य ठीक नहीं था। फिर भी आये और आर्यवीर शिविरों में भी आप प्रसन्न से जाते थे।

दिव्य मातृत्व से ही दिव्य सन्तान निर्माण संभव

– डा0 अर्चना प्रिय आर्य (संस्थापिका एवं अध्यक्षा: संस्कार जागृति मिशन)

पुत्र का निर्माण करने के कारण ही नारी की संज्ञा माता है। जननी तो हर स्त्री होती है परन्तु माँ के विषय में कहा जाता है 'जो करे पुत्र निर्माण माता सोई' और इसीलिए महर्षि मनु ने माँ को दस सहस्र आचार्यों के समान कहा है–

उपाध्यायान् दशाचार्य आचार्याणां शतं पिता।
सहस्रं तु पितृन माता गौरवेणातिरिच्यते।।

माँ सन्तान के नाम पर कूड़ा, कचरा पैदा कर धरती माँ को बोझ नहीं बढ़ती थी, बल्कि ऐसी चरित्रवान, जितेन्द्रिय, वीर बहादुर व शक्तिशाली सन्तान का निर्माण करती थी जो भारत माँ के दर्द को दूर करने वाली होती थी। क्योंकि वेदों ने कहा है–'वीरभोग्या वसुन्धरा' अर्थात् ये भूमि वीरों के लिए है, कायर व कमजोर लोगों के लिए नहीं है। यही कारण था कि पहले यदि नारी अपने को निर्दोष प्रस्तुत करती थी तो बात की शपथ लेती थी। कहते हैं कि सप्तमहर्षि माता अरून्धती सहित यात्रा कर रहे थे। मार्ग में किसी वस्तु की चोरी हो गई। प्रत्येक अपनी सफाई देने लगा। माता अरून्धती कहती हैं 'जो पाप अयोग्य और दुर्बल सन्तान उत्पन्न करने का होता है वह पाप मुझे लगे, यदि मैंने चोरी की हो।' यहाँ स्पष्ट है कि प्राचीन मातायें आयोग्य और दुर्बल सन्तान पैदा करना महापाप समझती थीं।

योगीराज श्रीकृष्ण की वीरता, शौर्य, राजनीतिकता, प्रभुशक्ति, गोमाता प्रेम, सेवा भाव और धर्मशीलता से आप परिचित हैं, परन्तु इसका मूल भी आपको माता देवकी के अनुपम धैर्य, कष्ट, सहिष्णुता, रूप, तप, वीरता, ईश्वर प्रेम और माता यशोदा की लोरियों में देखना होगा। छत्रपति शिवाजी को सिंहगढ़ विजय की प्रेरणा करने वाली माता जीजाबाई थी। ''सिंहगढ़ विजय करो बेटा भगवा ध्वज चलकर फैराओ।'' भक्त ध्रुव का निर्माण करने वाली माता सुनीति थी। हनुमान का निर्माण अंजना ने किया, भीष्म पितामह की व्रतनिष्ठा का मूल उनकी माता गंगा की व्रतसाधना में छिपा है। आल्हा ऊदल की वीरता का रहस्य माता देवलीदेवी की शिक्षायें हैं। गोरा–बादल की प्राण संचारी शक्ति माता जवाहरबाई और हताश पुत्र संजय को धिक्कारते हुए पुनः कर्त्तव्य पथ पर आरूढ़ करने वाली वीर माता मदालसा के उदाहरण में सर्वाधिक स्पष्ट हुआ है। वे अपने पुत्रों विक्रान्त, सुबाहु एवं शत्रुमर्दन को शुद्वोऽसि, बुद्वोऽसि, निरंजनोऽसि, संसार माया परिवर्जितोऽसि का उपदेश करके विरक्त बना देती है। चौथे पुत्र अलर्क को भी जब यही उपदेश करने लगी तो राजा चिन्तित हो उठते हैं और कहते है 'देवि! इसे भी विरक्त बनाकर मेरी वंश परम्परा उच्छेद करने पर क्यों तुली हो? इसे प्रवृत्ति मार्ग में लगाओ और उसके अनुकूल ही उपदेश दो। मदालसा ने पति की आज्ञा मान ली और अलर्क को बचपन में ही व्यवहार–शास्त्र का पण्डित बना दिया। उसे राजनीति का पूर्ण ज्ञान कराया। धर्म, अर्थ और काम तीनों शास्त्रों में वह प्रवीण बन गया। बड़े होने पर पिता–मता ने अलर्क को राजगद्दी पर बिठाया और स्वयं वन में तपस्या करने के लिए चले गये। किसी कवि की पंक्तियां प्रसंगवश पठनीय हैं–

माता के सिखाये पुत्र कायर और क्रूर होत।
माता के सिखाये पुत्र दाता और शूर हैं।।
माता के सिखाये पुत्र ब्रह्मचारी बलवान होत।
माता के सिखाये पुत्र जग में मशहूर हैं।।

हमारी मातायें, बहिने आज भी महर्षि दयानन्द, सुभाष चन्द्र बोस, सरदार बल्लभभाई पटेल, सरदार भगत सिंह, लाल बहादुर शास्त्री सरीखे वालों को निर्माण देकर वे अपने महान राष्ट्र को फिर जगद्गुरू बनाने में योगदान दे सकती हैं। इसके लिए उन्हें 'सन्तति निर्माण शास्त्र' का अध्ययन करना होगा। गर्भाधान से लेकर उपनयन संस्कार तक इसी विज्ञान का शिक्षण है। मनुस्मृति आदि धर्म शास्त्रों में भी इसके लिए आवश्यक विधान हैं। गर्भाधान प्रक्रिया के पीछे एक स्वस्थ्य कल्पना और उत्कृष्ट भावना, रहन–सहन किस प्रकार के चित्रों का अवलोकन किस प्रकार के ग्रन्थों का अध्ययन, बालक को किस–किसी प्रकार की लोरियां, रहन–सहन आदि किस प्रकार की कहानियां, कवित्तायें, गीत कण्ठस्थ कराना, कैसी स्त्रियों का साथ आदि किस प्रकार की लोरियां, रहन–सहन आदि किस प्रकार की कहानियां, का शिष्टाचार को सन्तति निर्माण विज्ञान के अनेक विभाग हैं।

खेत में उत्तम फसल प्राप्त करने के लिए बीज डालने के पूर्व खेत को तैयार करना होता है। माँ ही वह खेत है। ''माता निर्माता भवति'' माँ ही निर्मात्री शक्ति है। मातायें ही किसी राष्ट्र और जन–जीवन की आधार शिला है परन्तु अपनी मनोभूमि को ऐसा बनाने के लिए, मानव जीवन के महत्व, ईश्वर भक्ति और मात्भूमि भक्ति के रहस्य को जानने के साथ ही इस युग के महिमामय क्रान्तिदर्शी ऋषि दयानन्द द्वारा लिखित सोलह संस्कारों की वैदिक विधि महत्व और प्रक्रिया को समझना आवश्यक होगा। रामप्रसाद बिस्मिल की माँ ने बचपन से ही अपने बच्चे को स्वामी दयानन्द का यह सन्देश सुनाकर ''गन्दे से गन्दा स्वदेशी राज्य, अच्छे से अच्छे विदेशी राज्य से अच्छा है।'' फाँसी की रस्सी को चूमने की प्रेरणा दी थी।

आज के युग में सबसे बड़ी समस्या है मानवता से युक्त सच्चे मानव का अकाल। आज यही समझना है कि आर्दश मानवों के इस अकाल को पुरूष नहीं स्त्रियाँ ही दूर कर सकती हैं क्योंकि स्त्री का वास्तविक स्वरूप माता का है और 'माता निर्माता भवति' माता ही राष्ट्र और जीवन की निर्मात्री शक्ति है। 'मातृवान, पितृवान आचार्यवान पुरूषो वेदः' शतपथ ब्राह्मण का यह वचन है। जब तीन उत्तम शिक्षक अर्थात् एक माता दूसरा पिता और तीसरा आचार्य होवे तभी मनुष्य ज्ञानवान बनता है। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय समुल्लास में लिखा है कि वह सन्तान बड़ी भाग्यवान है जिसके माता–पिता धार्मिक, विद्वान हों। जितना माता से सन्तानों को उपदेश और उपकार पहुंचता है उतना किसी से नहीं। कितना माता–पिता संतानों पर प्रेम और उनका हित करना चाहती है उतना अन्य कोई नहीं करता। इसलिए ''प्रशस्ता धार्मिकी माता यस्य स मातृवान'' धन्य वह माता है कि जो गर्भाधान से लेकर जब तक शिक्षा पूरी न हो तब तक सुशीलता का उपदेश करे।

राम प्रसाद बिस्मिल को गोरखपुर की जेल में ब्रिटिश राज्य को उखाड़ने के प्रयत्न में फाँसी की सजा दी जा चुकी थी। भारत के गवर्नर जनरल ने क्षमा माँग लेने और भविष्य में वैसा न करने का आश्वासन देने पर फाँसी से छुटकारा देने का आश्वासन दे दिया। रामप्रसाद बिस्मिल की फाँसी से एक दिन पूर्व उनके पिता उससे मिलने आये और उन्होंने पुत्र–प्रेम से विहल हो उसे क्षमा मांगने और भविष्य में स्वतन्त्रता के संग्राम में न कूदने की मार्मिक अपील की। पाठको! लेकिन एक आर्यवीर को मृत्यु भयभीत नहीं कर सकती थी। स्वामी दयानन्द के अनुयायी इस बिस्मिल के लिए मृत्यु कोई भयावली वस्तु नहीं थी। मृत्यु का अर्थ उसकी दृष्टि में था मां की गोद में सो जाना। छोटा बच्चा दिन भर खिलखिलाता है, हंसता है, रोता है, गिरता है और रात्रि होते ही मां उसे उठा लेती हैं यही हाल जीव का है। संसार से जीव को मृत्यु माता उठा लेती है। मृत्यु मानो महामाया है, महाप्रस्थान है, मृत्यु महा निद्रा है, मृत्यु मानो शान्ति है, मृत्यु मानो नवजीवन का आरम्भ है, मृत्यु मानो आनन्द का दर्शन है, मृत्यु मानो पर्व है, मृत्यु मानो प्रियतम के पास जाना है। तब भला यह मत्यु रामप्रसाद बिस्मिल को कैसे भयभीत कर सकती थी। उसने पिता की प्रार्थना अस्वीकार कर दी। कुछ समय पश्चात् उसकी मां पहुंची। मां के पहुचते ही विस्मिल ने रोना शुरू कर दिया माँ के आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। मां ने बेटे को फटकारते हुए कहा कि जब मरने से इतना ही डर लगता था तो इस मार्ग को क्यों चुना? मां के इन वचनों को सुनकर वो बिस्मिल अपनी आंखों से आंसू पोंछते हुए बोला, ''मां! मैं मृत्यु से डरकर नहीं रो रहा हूं। मौत का मुझे कोई गम नहीं है परन्तु मैं तो इस लिए रो रहा हूं कि मरने के बाद मुझे तुझ तैसी बहादुर मां की गोद कहाँ मिलेगी?

वास्तव में माताओं ने अपने हृदय के तीव्र वेगों से जो चमत्कार किये हैं, उनके अनेक उदाहरण दिये जा सकते हैं। माता कौशल्या, माता अंजना, माता मदालसा, माता देवकी, माता यशोदा, जीजाबाई आदि के शत सहस्र उदाहरण हैं। जिन्होंने सन्तान निर्माण का आदर्श प्रस्तुत कर धन्यता और अमरता प्राप्त की है।

नारी नर का निर्माण करें।
मनु, व्यास, कृष्ण, राम जैसे पुत्रों को जने।
नरी गुण का आधान करे, प्रताप, शिवा, गोविन्द बने।

महाभारत का उदाहरण हमारे सामने है। वीर अभिमन्यु की मां सुभद्रा अपने पति अर्जुन से चक्रव्यूह भेदन का ज्ञान प्राप्त करते–करते सो गई। परिणामतः बालक अभिमन्यु का शिक्षण अधूरा रहा और वह चक्रव्यूह से बाहर न निकल सकने के कारण पराजित हुआ। इतिहास साक्षी है कि शिवाजी महाराज ने राजमाता जीजाबाई ने गर्भकाल से ही शिक्षण दिया था। उनका उद्देश्य था कि वह बालक गो–ब्राह्मण प्रतिपालक एवं हिन्दू राष्ट्र का पुनरूत्थान करने वाला बने।

शेष पृष्ठ ५ पर

पृष्ठ ४ का शेष

दिव्य मातृत्व से ही दिव्य ...

इसलिए उन्होंने बालक शिवाजी के चरित्र का निर्माण करने वाला संस्कारप्रद वातावरण गर्भकाल से ही उपलब्ध कराया। उपासना करती थी। सूर्योपासक माता राणुबाई ने सूर्यसम दिव्य, तेजस्वी, विश्व की चिन्ता करने वाले सुपुत्र को जन्म दिया। यही बालक स्वामी रामदास के नाम से प्रसिद्ध हुआ। कहने का तात्पर्य है कि ऐसे अनेक उदाहरण हमारे इतिहास के पृष्ठों में छिपे हैं, जिनसे यह स्पष्ट होता है कि माता के प्रयत्नों के परिणामस्वरूप बालक की वैसी ही निर्मित हुई, जैसा वह चाहती थी।

वह मार्गदर्शक होती है। वह जैसा चित्र बालक के मानस पर अंकित करती है, बालक वैसा ही बनता है। एक बार बातों–बातों में बालक नरेन्द्र ने कह दिया कि मैं तो कोचवान बनूंगा। ममतामयी मां ने तुरन्त स्थिति को संभालकर कहा ठीक है तुम कोचवान ही बनना परन्तु श्रीकृष्ण जैसे। इतना कहकर उन्होंने अर्जुन का रथ हांकते श्रीकृष्ण का चित्र दिखाया।

हर महान व्यक्तित्व के पीछे एक मां छिपी है और छिपा है उसका ममत्व। श्रेष्ठ सन्तति के निर्माण हेतु माता का संस्कारित होना देश की आवश्यकता है। इसलिए आज बालिकाओं की शिक्षा इस प्रकार की हो या विचार होना चाहिए। उसके मन में स्त्रीत्व के प्रति हीन भावना न हो। उसे अपने नारी होने पर गर्व हो तथा वह स्वयं कन्या के प्रति जाग्रत हुई अनावस्था को दूर कर उसमें भावी माता के संस्कारों को भरने के प्रति सजग बने।

आज की माताओं को विचारना है कि उसे कैसा साहित्य पढ़ना होगा, घर का वातावरण कैसा हो। उसके मन हृदय में वर्तमान परिस्थिति के अनुसार भव्य दिव्य राष्ट्र की परिकल्पना एवं भक्ति कैसे जागृत हो? तभी वह भावी नागरिक को धर्मभिमुख कर्तव्य तत्पर एवं राष्ट्र के प्रति सजग बना सकती है। खाओ, पीओ, मस्त रहो। यह अपने देश की संस्कृति में नहीं है। अपनी संस्कृति में पर के लिए अर्थात् समाज, राष्ट्र, परिवार के लिए जीने की अवधारण है। मातृत्व का यह केवल आज श्रंगृार भोग–विलास के मार्ग से प्राप्त हुआ जीवन का प्रसंग नहीं है, अपितु समझ बूझकर स्वयं स्वीकारा हुआ एक महान पवित्रतम क्षण है। यह सच है कि कौशल्या केवल रानी होती और भोग–विलास में रहकर संतान को जन्म देती तो संतान राम न बनकर कुछ और होती। श्रीराम माता कौशल्या के संस्कारों का प्रतिफल है। हमारे देश की माताओं को भोगवादी संस्कृति से दूर रहना होगा। एक रोटी को बांटकर खाने की प्रेरणा मां ही अन्तःकरण में जाग्रत करती है। जब यहां के नागरिक भोगवाद से दूर रहकर, आर्य तत्वज्ञान को जीवन में उतार कर, स्वार्थ विहीन, भ्रष्टाचारमुक्त, दिव्य, तेजस्वी राष्ट्र के निर्माण में क्षमतावान बनेंगे तो देश समुन्नत होगा। यही दिव्य भाव मां के हृदय में चाहिए। दिव्य मातृत्व, दिव्य नागरिक निर्माण करेगा और नागरिक निर्माण करेंगे समुन्नत राष्ट्र।

देवियां देश की जाग जाये अगर।
युग स्वयं ही बदलता चला जायेगा।।

भूल सुधार

अंक १४ में भूलवश कार्यालय अधीक्षक भुवन चन्द पाठक जी का नाम गलती से छप गया वर्तमान में कार्यालय अधीक्षक श्री कृष्ण मुरारी जी हैं।

वर्तमान में आर्यसमाज कितना प्रासंगिक ?

आदित्य प्रकाश आर्य

महाभारत युद्ध के बाद भारत मानसिक रूप से टूट गया था, चारों ओर निराशा, हताशा का वातावरण था। इसी अन्तराल में हूण, शक, गोंड आदि ने अपने साम्राजय स्थापित किये तथा मुगल, तुर्क, पठान भी भारत के शासक बने। इसी बीच युद्ध, महावीर, शंकराचार्य जैसे महामानवों ने भारतीय समाज को झकझोर कर जगाने का प्रयास किया तथा कबीर, सूर, तुलसी, नानक, मीरा, दादू, रविदास आदि सन्तों के जन जागरण से भी कोई ऐतिहासिक सफलता हाथ नहीं लगी। अन्ततोगत्व मुगलों के बाद १७५२–१९४७ तक भारत अंग्रेजों के कब्जे में रहा। ब्रिटिश शासन से पूर्व भारत छिन्न–भिन्न छोटे–छोटे राज्यों में बटा हुआ था उसको व्यवस्थित कर एक केन्द्रीय राज्य की स्थापना उनकी बहुत बड़ी उपब्धि थी।

वैदिक सार्वभौम सर्वतन्त्र सिद्धान्त जो विश्व की प्रचीनता संस्कृति थी, बह अपने उदगम स्थान भारत में भी बेगानी होकर नष्ट प्राय हो रही थी। वैदिक गणराज्यों में राज्यार्थ, विद्यार्थी और धर्माय सभाऐं जो एक दूसरे के सहयोग से चलती थीं उनमें केवल राजतन्त्र सभा ही बची थी। धार्मिक, शैक्षिक, सांस्कृतिक स्तर पर भारतीय जनमानस मनोदैन्य की स्थिति से गुजर रहा था। ब्रिटिश शासन काल में भारत ने फिर संभलना शुरू किया और राजाराम मोहन राय, देवेन्द्रनाथ ठाकुर, केशव चन्द्र सेन, महर्षि दयानन्द, स्वामी विवेकानन्द, रामकृष्ण परमहंस, सर सैय्यद अहमद खाँ जैसे समाज सुधारकों का जन्म हुआ तथा दादाभाई नौरोजी, गोपाल कृष्ण गोखले, बालगंगाधर तिलक, गांधी, नेहरू ने देश की आजादी के लिए लड़ाई लड़ी और विजय प्राप्त की। इस लड़ाई का आधार भूमि इस शासन के समय में स्थापित सामाजिक संस्थाऐं जैसे ब्रह्म समाज, रामकृष्ण मिशन, आर्य समाज, प्रार्थना समाज थियोसोफिकल सोसाइटी इत्यादी संस्थाओं ने तैयार की थी।

इनमें कुछ तो संस्थाऐं पश्चिमी विचार धारा से प्रभावति होकर अंग्रेजों के सुर में सुर मिला रही थीं। जो शीघ्र ही ब्रिटिश शासन के समाप्त होते ही वे भी समाप्त हो गयी। इसके अलावा आर्य समाज एक ऐसी सुधारवादी संस्था थी जिसका आधार शुद्ध स्वदेशी वैदिक चिन्तन था। आर्य समाज ने समाज में व्याप्त कुरीतियों का समाधान अपने ही मूल ग्रन्थ वेदों में खोजा और वेदों की ओर लौटने का आहवाहन किया। कुरीतियों के उन्मूलन और सही वैदिक धर्म की पहचान के लिए स्वामी दयानन्द सरस्वती ने १८५७ ई० में सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ की रचना की थी जो आर्य समाज के आन्दोलन की आचार सहिंता बनी। आज सत्यार्थ प्रकाश और आर्य समाज एक दूसरे के पर्याय बन गये हैं। पिछली शताब्दी के पूर्वार्ध तक आर्य समाज ने सामाजिक उन्नति के हर क्षेत्र में अविस्मरणीय कार्य किया। तत्कालीन खिलाफत आन्दोलन से जुड़ें मौलाना हजरत मोहानी आर्य समाज की प्रशंसा करते हुए कहते हैं कि " मैं देखता हूं जब कोई भी हिन्दु

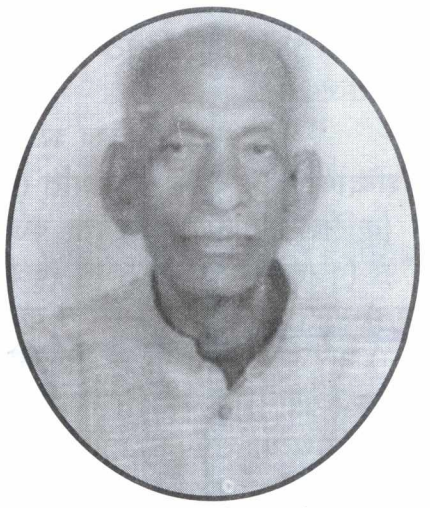

आर्यसामज में आता है तो उसमें बहुत विशेषता आ जाती है उसके अन्दर उत्साह, देशभक्ति की अद्भुत स्पिीट काम करने लगती है, देश के कामों को ही ले लीजिए जब तक लोग स्वराज का स्वप्न देख रहे थे स्वामी दयानन्द और आर्य सामज अपनी पुस्तकों द्वारा उसका प्रचार करने में लगे थे। मैं प्रसन्नता के साथ कहता हूं कि असहयोग युग से पहले ही ६० प्रतिशत आर्य समाजी स्वराज के काम में हिस्सा लेने वाले लीडर थे "कांग्रेस के संस्थापक ए.ओ.ह्यूम से लेकर आधुनिक राजनीतिज्ञों तक ने आर्य समाज के राष्ट्र निर्माण के कार्यों की सराहना की है।

आजादी से पूर्व 'यथा राजा तथा प्रजा' की लोकोक्ति प्रचलित थी, अब प्राजातान्त्रिक व्यवस्था लागू होने पर यह पलट कर 'यथा प्रजा तथा राजा' हो गयी। देश की जनता प्रजातन्त्र के लिए संस्कारित और शिक्षित नहीं है और राजनीति, धर्मनीति और विद्यानीति में चेतना शून्य है। राजनैतिक महत्वाकांक्षी भारतीय समाज के जातिवाद, सम्प्रदायवाद क्षेत्रवाद में वोट की खातिर बांट रहे हैं। आर्यसामज जैसी समाज सुधारक संस्थाऐं महत्वहीन कर दी गयी हैं। आर्य समाज की निष्क्रियता के कारण ही देश की सामाजिक, धार्मिक व्यवस्थाऐं सब खराब हो गयी हैं राजनैतिक, आर्थिक और सामाजिक अपराध हमारे भोग–विलासी जीवन के कारण बढ़ रहे हैं। यह स्वभाविक सत्य है जब धन ऐश्वर्य आता है तब नागरिक अपने कर्तव्यों की अनदेखी कर पुरूषार्थ छोड़ भोग विलासी जीवन यापन में लग जाता है। आर्य समाज सदैव त्याग पूर्ण जीवन यापन का सन्देश देता रहा है।

आर्य समाज, भारतीय संविधान की प्रस्तावना में वर्णित सामाजिक न्याय, समता समभाव, उदारता और देश की अखण्डता के लिए सत्यार्थ प्रकाश में वर्णित सिद्धान्तों के आधार पर विगत १४४ वर्षों से कार्य कर रहा है। जातीवाद, अल्पसंख्यकवाद, बहुसंख्यक वाद के नाम पर समाज को बाटना राष्ट्रीय एकता अखण्डता में बाधक मानता है। वस्तुतः आर्य समाज का समाज एवं राष्ट्र सुधार का कार्यक्रम आज भी प्रासांगिक है इसकी प्रासंगिता पर अमेरिका के प्रसिद्ध विद्वान एण्ड्रो जैक्सन डेविड अपनी पुस्तक (वियाण्ड द वैली) के पृष्ठ सं ३८२ पर लिखते हैं " यह अग्नि सनातन आर्यधर्म को वास्तविक पवित्र दशा में

इन्द्र वृत्रासुर संग्राम

–प्रताप कुमार 'साधक'

अहन्भ्रं वृत्रतरं व्यंसमिन्द्रो वज्रेण महता वधेन।
स्कन्धांसीव कुलिशेना वितृण्णाहिः शयत उपपृक् पृथिव्याः।।

–ऋग्वेद मं० १ सूक्त ३२ मंत्र ५।।

शब्दार्थः– (इन्द्रः) इन्द्र अर्थात् (महता) विशाल (कुलिशेन वज्रेण) धारयुक्त वज्र से– किरणों से (वृत्रतरं) अत्यन्त सघन (वृत्रं) मेघ को (अहन्) मारता है– छिन्न–भिन्न कर देता है। (वधेन) मार दिए जाने पर – किरणों द्वारा काट समान (व्यंसम्) छिन्न–भिन्न अंगों वाला (अहिः) मेघ (पृथिव्याः उपपृक्) पृथिवी के ऊपर (शयते) सोता है। अर्थात् जलरूप शरीर पृथिवी पर फैल जाता है।

ऋग्वेद प्रथम मण्डल के ३२ वें सूक्त के सभी १५ मंत्रों का देवता (विषय) इन्द्र है। इन मंत्रों में इन्द्र शब्द सूर्य के लिये प्रयुक्त हुआ है, और सूर्य के विभिन्न गुणों का उपाख्यान करके राजाओं – राष्ट्राध्यक्षों को तदनुकूल बर्तने का आदेश, उपदेश दिया गया है। उपरोक्त सूक्त के छ मंत्रों (५, ७, ८, ६, व ११) में मेघ के लिए वृत्र शब्द आया है और छ मंत्रों (१, २, ३, ४, १३ व १४) में 'अहि' शब्द का प्रयोग हुआ है। मंत्र–छ में मेघ को 'इन्द्र शत्रु' कहा गया है। 'निघण्टु' में मेघ का नाम 'वृत्र' है। वृत्रों वृणोते' प्रकाश का आवरण करने वाला, प्रकाश को ढंकने वाला। सूर्य अंधकार को हटाकर प्रकाश करता है, और मेघ सूर्य के प्रकाश को ढककर अंधकार ला देता है, अतः वह 'इन्द्र शत्रु' है।

वर्षाकाल में इन्द्र (सूर्य) और वृत्र (बादलों) का यह युद्ध जैसा दृश्य अन्तरिक्ष में प्रायः देखने में आता है। सघन मेघ कभी–कभी सूर्य को पूरा ढककर पृथिवी पर अन्धकार ला देते हैं, इसे साहित्यिक भाषा में कहा जा सकता है कि मेघ सूर्य को निगल लेता है (शब्दान्तर से कहें तो–वृत्र ने इन्द्र को निगल लिया) किन्तु कुछ समय बाद बादल कट–छट कर धरती पर वर्षा के रूप में बरस कर समाप्त हो जाते हैं। तब अन्तरिक्ष निर्मल हो जाने से सूर्य और प्रखर होकर प्रकाशित होता है। जैसे–सूर्य ने अपने रश्मियों रूपी तीक्ष्ण व्रज से मेघ को काट–काट कर पृथिवी पर गिरा दिया हो और विजयी होने से प्रखरतर हो गया हो। अन्तरिक्ष में होने वाली इस प्राकृतिक घटना का कितना सुन्दर वर्णन रूपक अलंकार द्वारा प्रभु के दिव्य काव्य–वेद में किया गया है। किन्तु पुराण के रचयिता ने इन जड़ देवताओं के प्राकृतिक क्रिया–कलापों को ऐतिहासिक बना दिया। सूर्य को देवराज इन्द्र और मेघ को वृत्रासूर नाम देकर एक काल्पनिक कहानी यूं बना दी गई।

'त्वष्टा के पुत्र वृत्रासूर ने युद्ध में इन्द्र को निगल लिया। तब सब देवतागण विष्णु के पाए गए और उनसे प्रार्थना की कि वे वृत्रासुर को मारने का उपाय बतलाएं। विष्णु ने कहा–''मैं समुद्र के फेन में प्रविष्ट हो जाउंगा। तुम सब उस फेन को उठाकर वृत्र को मारना, वह मर जाएगा। देवताओं ने ऐसा ही किया, जिस से, वृत्रासुर मर गया। इन्द्र और अधिक तेजस्वी होकर प्रकट हुआ।'

इन्द्र और वृत्र शब्दों के वास्तविक अर्थ समझ लेने से उपरोक्त कथानक का आशय स्पष्ट हो जाता है। विचार करें– सूर्य ज्योति पुञ्ज है और मेघ ज्योति को ढकने वाला तम का प्रतिनिधि है। सूर्य ही मानो ज्ञान है, सत्य है और तमोमय मेघ ही अज्ञान है, असत्य है। जीवन रक्षक सूर्य ही अमृत है और उसका शत्रु मेघ ही मानो मृत्यु है। ये दोनों एक दूसरे के विरोधी हैं, किवा एक का भाव ही दूसरे का अभाव है। मनुष्य के सम्मुख दो परस्पर विरोधी विकल्प होते हैं, जिन में से एक को चुनना होता है। बुद्धिमान वही है जो श्रेयस्कर का वरण करे, अतः मनुष्य मान के लिए ऋषियों का यह आदेश है–

असतो मा सद्गमय।
तमसो मा ज्योतिर्गमय।
मृत्योर्मा अमृतं गमय।

उपरोक्त निर्देश कालान्तर से प्रादूर्भू सम्प्रदायों/मजहबों में भी देखने को मिलता है, यद्यपि कुछ अज्ञान, जन्य भेद के साथ। पारसियों के धर्मग्रन्थ जिन्द–अवेस्ता में इन दोनों कल्याणकारी और विनाशकारी शक्तियों को क्रमशः 'अहुर मज़दा' और 'आंगीरा मन्यू' कहा गया है। यहूदी तथा ईसाई धर्मग्रन्थों में इनके नाम 'जेहोवा' और 'शैतान' हैं।

वेदोक्त शब्द 'अहि' (जो वृत्र का पर्यायवाची है) को 'अवेस्ता' में 'अज्हि' कहा गया है, और इसे पाप वृत्रि मानते हुए सर्प का रूप दे दिया है। संस्कृत में 'अंह' का अर्थ पाप है, जिसे यूनानी भाषा में 'अगास' कहा जाता है। अहि और अंह मिलते जुलते शब्द हैं। सम्भवतः इसी आधार पर जिन्दावस्ता में पाप को सर्प का रूप दे दिया गया, जिसकी नकल यहूदियों, ईसाइयों और मुसलमानों के धर्मग्रन्थों में भी उपलब्ध है। उनके अनुसार खुदा ने अदन के बाग में शैतान को शाप दिया था कि वह धरती पर साप बन कर रहेगा। इन सम्प्रदायों में सर्प रूपी शैतान एक बहुत बड़ी शक्ति माना गया है, जो मनुष्यों को बुरे कार्य करने के लिए प्रेरित करता है। इनके अनुसार खुदा और शैतन दो परस्पर विरोधी अलौकिक शक्ति सम्पन्न हैं। किन्तु यह सिद्धान्त अनेक प्रकार से अयुक्त ठहरता है। वस्तुतः सर्वोपरि अलौकिक शक्ति एक परमेश्वर ही है, जिसका नियंत्रण सभी आत्माओं तथा प्रकृति जन्म पदार्थों पर है। जैसे प्रकाश के प्रभाव को अन्धकार कहते हैं, वैसे ही ज्ञान के अभाव को अज्ञान कहते हैं। उपरोक्त वेदमंत्र के आधिदैविक अर्थ में सूर्य ही इन्द्र और मेघ ही वृत्र है।

मंत्र की अधिभौतिक व्याख्या करें, तो तेजस्वी ऐश्वर्यवान् राजा–शासक 'इन्द्र' कहलाता है, तथा पापचारी, अत्याचारी, आतंकवादी, राष्ट्रविरोधी दुष्ट व्यक्ति ही 'वृत्र' या 'अहि' होते है। जो राजा दुष्टों, वैरियों का नाश करने में समर्थ होता है, वही तेजस्वी राष्ट्रध्यक्ष इन्द्र कहलाने के योग्य है। उपरोक्त वेदमंत्र में राजा/सेनापति को ऐसा ही करने का आदेश दिया गया है।

आध्यात्मिक व्याख्या करें तो इन्द्र नाम जीवात्मा का है, जो इन्द्रियों का नियंत्रक और स्वामी होता है। अविद्या, अज्ञान और पाप वृत्रि ही वृत्र हैं। ईश्वर का भी एक नाम इन्द्र है। सत्यार्थ प्रकाश में महर्षि ने इन्द्र की परिभाषा की है। सत्यार्थ प्रकाश में महर्षि ने इन्द्र की परिभाषा की है– 'य इन्दति परमैश्वर्यवान् भवति स इन्द्रः परमेश्वरः' जो अखिल ऐश्वर्य युक्त है, इस से परमात्मा का नाम इन्द्र है।

परमात्मा समस्त सत्य ज्ञान, सत्य विद्या का प्रकाशक है, जिसकी उपासना करके जिससे मुक्त होकर जीवात्मा भी ज्ञान, बल और आनन्द प्राप्त करता है। आत्मा यद्यपि शुद्ध–स्वरूप है, किन्तु काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, द्वेष, अहंकार आदि मनोविकारों से आच्छादित होकर अपनी प्रभा खो देता है। उस समय मनुष्य का अन्तःकरण मानो युद्धक्षेत्र ही बन जाता है। ऐसे समय जब कुविचार रूपी वृत्रासुर शक्तिशाली हो जाता है, तो मनुष्य विवेकहीन होकर आत्मघाती पापकर्मों में प्रवृत्त हो जाता है। किन्तु जब आत्म–चिन्तन और योग–साधना के माध्यम से आत्मा ईश्वरीय प्रकाश से युक्त हो प्रभावान होता है, तो समस्त वृत्रियों का निरोध हो जाता है, मेघों के समान वासनाओं का जमाव फटकर, छिन्न, भिन्न होकर वर्षा की बूंदों के समान बह जाता है। वस्तुतः भर्ग स्वरूप इन्द्र, परमेश्वर का ध्यान करके हम अपने आन्तरिक दुरितों को दूर कर कल्याणकारी 'भद्र' की प्राप्ति कर सकते हैं। तब हमारा वृत्र–विहनी हृदयाकाश पवमान परमेश्वर के पावन प्रकाश से प्रदीप्त हो उठेगा। यही हम सब के लिए ईश्वरादेश है कि हम इन्द्र, वृत्रासुर' संग्राम में वृत्रासुर को पराजित करके स्वयं विजयी इन्द्र बनें।

पृष्ठ ५ का शेष

वर्तमान में आर्यसमाज ...

लाने के लिए भट्टी में थी जिसे आर्य समाज कहते हैं, यह समस्त बुराइयों के समूह को नित्य शुद्ध करने वाली भट्टी में जलाकर भस्म कर देगी, तब तक रोग के स्थान पर स्वास्थ, मूर्तियों के स्थान पर प्रकृति, पोप के स्थान पर युक्ति, पाप के स्थान पर पुण्य, अविद्या के स्थान पर विज्ञान, घृणा के स्थान पर प्रेम, बैर के स्थान पर समता, नरक के स्थान पर स्वर्ग, दुख के स्थान पर, सुख, भूत प्रेत के स्थान पर परमेश्वर और प्रकृति का राज्य न हो जाये तब तक यह आर्यसमाज रूपी अग्नि जलती रहेगी। मैं इस अग्नि की दिशा को बधाई देता हूं, जब यह अग्नि सुन्दर पृथ्वी को नवजीवन प्रदान करेगी तो सार्वभौम, सुख समृद्धि और आनन्द का युग प्रारम्भ होगा।

विश्व की निगाह में आर्यसमाज आज भी प्रासांगिक है क्योंकि जिस महान उद्देश्य के लिये स्वामी दयानन्द सरस्वती ने आर्यसमाज की स्थापना की थी उसकी पूर्ति करना अभी भी शेष है। यह खेद की बात है जिस आर्यसमाज की नींव स्वामी जी ने अविद्या के नाश और विद्या की उन्नति के लिए रखी थी वे अब केवल यज्ञ आहुति के देवालय बनकर रह गये हैं। आर्य समाज को मन्दिर और संस्था बनाकर बड़ी भूल हुयी। आर्यसामज तो क्रन्तिकारी सामाजिक, राष्ट्रीय आन्दोलन का नाम है जिसकी देश की आजादी के बाद और भी अधिक आवश्यकता है। उसका शिथिल होना मानव समाज के लिए अहितकर है।

दयानन्द इण्टर कालेज के 37 वें वार्षिकोत्सव का समापन समारोह

दयानन्द इण्टर कालेज टनकपुर चम्पावत का त्रिदिवसीय वार्षिकोत्सव मनाया गया। प्रातः कालीन यज्ञादि कार्यक्रम के पश्चात् आये हुए आर्य विद्वानों पं० रघुराज शास्त्री, डॉ० विश्वमित्र शास्त्री (उपाध्यक्ष आर्य सभा रूद्रपुर) डॉ० मुकेश कुमार (एसोसिएट प्रोफेसर राजकीय महाविद्यालय वनबसा) द्वारा प्रवचन, भवन संगीत प्रस्तुत किये। इसी क्रम में विद्यालय के छात्र/छात्राओं द्वारा एकाकी भाषण व गीत प्रस्तुत किये गये, जिसमें बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओं, नशा मुक्ति *आदि एंकाकी* प्रस्तुत किये गये, श्री प्रदीप प्रशांत कुमार जी द्वारा भजन प्रस्तुत किये गये तथा यज्ञ की महिमा बताई कि यज्ञ करने करने से घर में सुख, शान्ति, व समृद्धि आती है। प्रबन्धक आचार्य रामदेव जी ने सभी आगन्तुकों का धन्यवाद किया।

आर्य समाज स्याना के उपाध्यक्ष ऋषि चौधरी की माता जी का देहावसान

आर्य समाज स्याना बु०शहर के उपाध्यक्ष श्री ऋषि चौधरी ऋषिडेरी स्याना की माता जी का लगभग–८७ वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। आर्यप्रतिनिधि सभा उ०प्र० की उप प्रधान सुदेश आर्या एवं सभा मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती गुरूकुल ने घर पर जाकर शोक संवेदना व्यक्त की तथा शान्ति यज्ञ सम्पन्न कराया। ऋषिडेरी स्याना धार्मिक सामाजिक एवं सरल सात्विक व्यक्तित्व हैं जो माता जी के द्वारा प्रदत्त संस्कारों का ही प्रभाव है। नगर पालिका स्याना की अध्यक्षा गुडिया देवी आपके ही परिवार में हैं पूरे नगर के मुख्य लोगों ने आकर आहुतियां प्रदान की क्षेत्रीय सांसद एवं विधायक, किसान यूनियन के राष्ट्रीय अध्यक्ष चौ० राकेश टिकैत भी आप इनके एक भाई किसान यूनियन में भी जिला संगठन में है। सभा प्रधान डा० धीरज सिंह जी ने भी अपनी शोक संवेदना व्यक्त की है।

–शिव कुमार शास्त्री – स्याना
प्रशान्त शास्त्री– स्याना बुलन्द शहर।

आर्य समाज सान्ताक्रुज़ का 74 वां वार्षिकोत्सव एवं पुरस्कार समारोह

शुक्रवार दिनांक २६.०१.२०१८ से रविवार दिनांक २८ जनवरी, २०१८ तक आर्य समाज सान्ताक्रुज़ का ७४ वां वार्षिकोत्सव एवं पुरस्कार समारोह आर्य समाज के विशाल सभागृह में मनया गया। इस अवसर पर ऋग्वेद के मन्त्रोच्चारण के साथ यज्ञ प्रातः ८.०० बजे से १०.०० बजे तक आयोजित किया गया जिसके ब्रह्मा आचार्य पं. वेदप्रकाश श्रोत्रिय (नई दिल्ली) एवं वेदपाठी पं० नामदेव आर्य पं० विनोद कुमार शास्त्री, पं० नरेन्द्र शास्त्री एवं पं० प्रभारंजन पाठक थे। वार्षिकोत्सव के अवसर पर ''वैदिक पुस्तक मेला' विशेष आकर्षक का केन्द्र रहा जिसमें सिर्फ महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत अमर ग्रन्थों की प्रदर्शनी एवं उनका विक्रय किया गया। श्री राजकुमार कोहली वयोवृद्ध विद्वान पुरस्कार प्राप्तकर्ता स्वामी सौम्यानन्द जी (मथुरा) रू० ३०००० /– का चेक, शॉल, ट्रॉफी, श्रीफल से सम्मानित किया गया।

''वेदांग पुरस्कार प्राप्तकर्ता आचार्य पं० वेदप्रकाश श्रोत्रिय जी (नई दिल्ली) रू ६०००० /– का चेक स्मृति चिन्ह, शॉल, श्रीफल व मोतीमाला से सम्मानित किया गया।

स्व० नारायणदास हासाननन्दानी विशिष्ट वेदांग पुरस्कार प्राप्तकर्ता आचार्य आचार्य सत्यजीत जी (अजमेर) रू० ४०००० /– का चेक, शाल, ट्रॉफी, श्रीफल एवं मोती माला से सम्मानित किया गया।

मेघजी भाई आर्य साहित्य पुरस्कार प्राप्तकर्ता डॉ० विनोदचन्द्र विद्यालंकार जी (हरिद्वार) रू० ४०००० /– का चेक, शॉल, ट्रॉफी, श्रीफल व माला भेंट कर सम्मानित किया गया।

श्रीमती लीलावती महाशय आर्य महिला पुरस्कार प्राप्तकर्ता आचार्य नीरजा जी (तेलंगाना) रू० ३०००० /– का चेक, शाल, ट्रॉफी एवं माला से सम्मानित किया गया।

पृष्ठ १ का शेष

दयानन्द के वीरों में यह...

सच्चे उत्साही जीवन उत्पन्न करने वाले सैनिक तैयार कर सकता है।

३. कालेजों स्कूलों में वैदिक धर्मी मिश्नरी (अध्यापक) रख कर वैदिक धर्म की शिक्षा पर बल देना चाहिए।

४. स्त्री समाज के संगठनों पर खास ध्यान देना चाहिये उनके नियम पूर्वक सत्संग आदि प्रोग्राम रखने चाहिये।

५. दैनिक सत्संगों, पारिवारिक सत्संगों और शास्त्रार्थ की प्रथा का फिर से आरम्भ करना चाहिए। इसके सिवाय में आर्य समाजी भाइयों से भी निवेदन है कि वे जो कहते है वह आचरण में भी लावे। केवल जुबानी जमा खर्च नहीं आज जनता हमारी बातों पर ध्यान नहीं देती है। वह तो कार्य देखना चाहती है हम संसार को आर्य बनाना चाहते हैं उससे पहले कम से कम अपने परिवार को आर्य विचार का बना ले। हम अपना चरित्र इतना ऊँचा और विचार इतने पवित्र रखें जिसको देख कर जनता। प्रभावित किया जा सकेगा।

गुरूकुल मंझावली फरीदाबाद (हरयाना) में यजुर्वेद पारायण यज्ञ एवं साधना शिविर 26 मार्च से 1 अप्रैल 2018 तक

स्वामी प्रणवानन्द जी द्वारा स्थापित पूज्य स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी सरस्वती की साधना स्थली पर साधना शिविर लगाया गया एवं यजुर्वेद यज्ञ का भी पारायण हुआ समापन सत्र में गुरूकुल सम्मेलन का आयोजन हुआ स्वामी, प्रकाश मुनि जी, स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी सुमेधानन्द जी सांसद, स्वामी देवव्रत जी, स्वामी श्रद्धानन्द जी, स्वामी अखिलानन्द जी के अतिरिक्त सन्यासी वानप्रस्थी तथा साधकों ने प्रभु उपासना के विषय में जागृति पैदा की गई। आर्य नेताओं में श्री ठा० विक्रम सिंह जी, कै० अभिमन्यु, सत्यपाल सिंह केन्द्रीय मन्त्री कै० रूद्रसेन सहित भारी संख्या में नेताओं ने आकर आहुतियां प्रदान की आचार्य धनंजय जी, आचार्य रवीन्द्र शास्त्री आचार्य यशवीर सिंह जी, आचार्य रामपाल शास्त्री, प्रियव्रत शास्त्री एवं आचार्य जितेन्द्र पुरूषार्थी जी का विशेष सहयोग रहा व्यवस्थापक सभी बड़े छात्र भी रहे सम्मेलन सुन्दर रहा पूज्य स्वामी जी के लिए बधाई सभा मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती जी ने भी शुभकामनाऐं प्रेषित की हैं।

वार्षिक सम्मेलन आर्य समाज सूरजपुर गो० बु० नगर (उ०प्र०)

३०, ३१ मार्च १ अप्रैल २०१८ को आर्य समाज के प्रांगण में स्वामी श्रद्धानन्द जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ हुआ सभा मन्त्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी का उपदेश हुआ आ० विमल आर्य जी के भाषण, नरदेव आर्य एवं अंजली आर्या के मधुर भजन हुए प्रधान रतनलाल मन्त्री धर्मवीर सिंह कोषा जी का विशेष सहयोग रहा संयोजन मूलचन्द्र आर्य ने किया तथा जिला सभा के अध्यक्ष वीरेश आर्य मन्त्री शिवकुमार आर्य, धर्मवीर प्रधान जी बिजेन्द्र सिंह आर्य, मुकेश नगर, राकेश आर्य एडवोकेट आदि–२ की उपस्थिति से कार्यक्रम भव्यता को प्राप्त हुआ।

–प्रदीप शास्त्री गुरूकुल पूठ

आर्य समाज कीर्तिनगर में ऋग्वेदयज्ञ सम्पन्न

२६ मार्च से १ अप्रैल २०१८ तक सभा मन्त्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती जी ककी अध्यक्षता में ऋग्वेदीय यज्ञ सम्पन्न हुआ प्रतिदिन प्रातः सायं स्वामी जी का उपदेश एवं श्री जगत वर्मा जी के भजन हुए वेदपाठ गुरूकुल के छात्रों ने किया। प्रधान ओम प्रकाश आर्य मन्त्री श्री सतीश चड्ढा जी एवं ऋषि पाल शास्त्री पुरोहित का विशेष सहयोग रहा।

आर्य समाज गढ़मुक्तेश्वर हापुड का शताब्दी समारोह

८ मार्च से ११ मार्च तक आर्य समाज गढ़मुक्तेश्वर का शताब्दी समारोह सभामंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्दउ सरस्वती के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ शोभा यात्रा भव्य रूपों में सम्पन्न हुई सभा मंत्री जी ने ध्वजारोहण किया प्रतिदिन विभिन्न सम्मेलनों का आयोजन किया गया वक्ता के रूप में श्री विष्णु मित्र शास्त्री, प्रमोद आचार्य, नरेन्द्र आचार्य, भानुप्रकाश आर्य बरेली नेकपाल आचार्य, चौ० सत्यवीर आर्य, स्वामी अखिलानन्द सरस्वती, वैध राजपाल शास्त्री जी का विशेष सम्मान किया उनकी आयु सम्प्रति ६७ वर्ष है आप स्वामी ओमानन्द जी के सहपाठी हैं। कार्यक्रम प्रभावशाली रहा समाज के प्रधान हरिश्चन्द्र आर्य उपप्रधान नीरज आर्य मन्त्री, आर्य कुमार आर्य आदित्य आर्य तथा श्री अनिल आर्य, अशोक आर्य, शान्तनु आर्य, तराचन्द्र आर्य, रामौतार आर्य, गजराज सिंह, ओ.पी. गौतम, एवं प्रधानाचार्य इण्टर कालेज का भरपूर सहयोग रहा। स्याना हापुड़, पिलखुवा गा० बाद एवं ग्रामीण आर्य समाजों की उपस्थिति की शोभा रही। शताब्दी की सफलता के लिए डा० धीरज सिंह प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० ने भी अधिकारियों को बधाई एवं शुभकामनायें प्रेषित हैं। प्रमोद आचार्य –अधिष्ठाता वेद प्रचार, हापुड़।

आर्य मित्र
नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर/फैक्सः ०५२२-२२८६३२८
का० प्रधान- ०६४१२७४४३४१, मंत्री- ०६८३७४०२१६२, व्यवस्थापक- ६३२०६२२२०५
ई-मेल : apsabhaup86@gmail.com

सेवा में,
.....
....

आर्य समाज के कार्यक्रमों की झलकियां

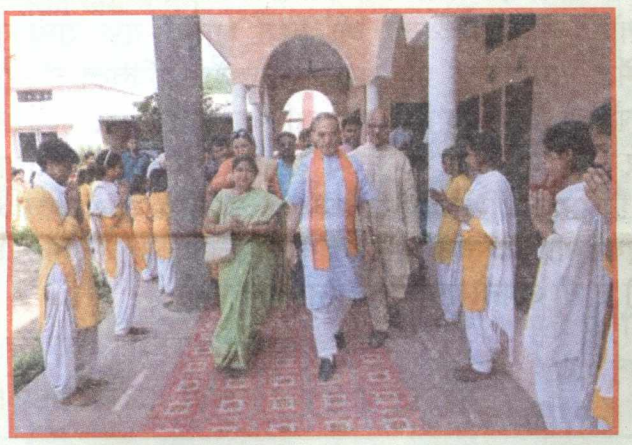

कन्या गुरूकुल नजीबाबाद में पहुंचे मानव संसाधन मंत्री डॉ० सतपाल सिंह जी

डी.ए.वी पब्लिक स्कूल बूढ़ाना मुजफ्फर नगर में अर्थव वेद पारायण सम्पन्न

डी.ए.वी पब्लिक स्कूल बूढ़ाना में अर्थव वेद पारायण सम्पन्न

गुरूकुल महाविद्यालय ततारपुर हापुड़ में सस्कृत सम्मेलन सम्पन्न

गुरूकुल महाविद्यालय ततारपुर हापुड़ में सस्कृत सम्मेलन सम्पन्न

गुरूकुल महाविद्यालय ततारपुर हापुड़ में सस्कृत सम्मेलन सम्पन्न

जिला सभा अमेठी, सुल्तानपुर द्वारा वेद प्रचार

आर्य समाज प्रतापगढ़ सुरेश चौरसिया द्वारा वेद प्रचार

आर्य समाज रायपुर शाहजहापुर का वार्षिकोत्सव सम्पन्न हुआ।

सभा कार्यालय अधीक्षक श्री कृष्णमुरारी जी, स्वामी आर्यवेश जी,
एवं सभा मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती जी के साथ

आर्य समाज महुजा का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज यासीनपुर हरदोई, श्री उमेश कुमार आर्य जी द्वारा फिल्म प्रसिद्ध
अभिनेता, श्री राजपाल यादव जी को सत्यार्थ प्रकाश व अन्य आर्ष ग्रन्थ भेंट करते हुए

अथर्ववेद पारायण यज्ञ समापन समारोह

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल बुढ़ाना में अथर्ववेद परायण यज्ञ के समापन समारोह के अवसर पर विद्यालय के छात्र–छात्राओं व स्टाफ के अतिरिक्त नगर के गणमान्य व्यक्तियों ने यज्ञ में आहुति दी तथा इस श्रेष्ठतम् कार्य में अपनी उपस्थिति से पुण्य का लाभ उठाया। आर्य विद्या सभा बुढ़ाना द्वारा आयोजित यज्ञ के दौरान योगेन्द्र आचार्य जी ने यज्ञ के महत्व पर प्रकाश डालते हुए अपने अमृत वचनों द्वारा बच्चों में भारतीय संस्कृति के भाव जागृत किये। इस अवसर पर बिजनौर से हमारे बीच पधारे श्री कुलदीप आर्य जी ने अपने भजनों व उपदेशों के माध्यम से सभी श्रोताओं का मन मोह लिया तथा मानव जीवन में सदैव व्यक्ति को दूसरों के गुण व अपनी गलतियां हमेशा देखने की प्रेरणा दी।

विद्यालय के प्रबन्धक श्री अरविन्द कुमार गर्ग ने यज्ञ में भाग लेने वाले सभीगणमान्य व्यक्तियों का धन्यवाद किया तथा यह विश्वास व्यक्त किया कि यज्ञ के आयोजन से बच्चों में अच्छे संस्कार विकसित होते हैं। निःसन्देह संस्कारवान छात्रों का राष्ट्र के निर्माण में विशेष योगदान होता है। इस पर विद्यालय की प्रधानाचार्य श्रीमती रेखा त्यागी, विद्यालय का समस्त स्टाफ, छात्र/छात्राऐं व नगर के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

स्वामी–आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक – मुद्रक –प्रकाशक –श्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शारदा प्रिंटिंग प्रेस, माडल हाउस, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है– सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।